ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

समकालीन हिंदी–उर्दू नाटकों के विकास में एस. एम. अजहर आलम की भूमिका

Role of M. S. Azhar Alam in The Development of Contemporary Hindi-Urdu Dramas

Paper Submission: 04/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

इबरार खान
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
कल्याणी विश्वविद्यालय,
कल्याणी, नदिया,
पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

हिंदी–उर्दू नाट्यकला और संस्कृति के विकास के उद्देश्य से गठित नाट्य संस्था 'लिटिल थेस्पियन' के संस्थापक एवं विभिन्न रंग सम्मानों से सम्मानित 'एस एम. अजहर आलम' एक प्रसिद्ध रंगकर्मी थें । वर्ष 1987 से इनका नाट्य सफर आरम्भ हुआ और अपने जीवन के अंतिम समय (अप्रैल 2021) तक वह लगातार रंग जगत में सक्रिय रहे । अपने 33 वर्ष के नाट्य सफर में वह निरंतर हिंदी–उर्दू नाटकों के विकास के लिए कार्यरत रहे । अतः समकालीन हिंदी–उर्दू नाटकों के विकास में उनके योगदान , उनकी भूमिका को स्पष्ट करने के उद्देश्य से यह शोधालेख लिखा गया है । इस रंगमंच अनुसंधान के लिए साहित्यिक अध्ययन एवं कलात्मक विश्लेषण , शाक्षात्कार पद्धति को अपनाया गया है । इस आलेख में उनका सामान्य परिचय , उनके रंग सफर , कार्यक्षेत्र जैसे–नाट्य लेखन , निर्देशन , अभिनय , अनुवाद , रूपांतरण , सेट एवं लाइट डिजाईन , उनके नाट्य प्रयोगों , उनके द्वारा निकाली जाने वाली नाट्य पत्रिका आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है ।

The founder of 'Little Thespian', a theatrical organization formed for the development of Hindi-Urdu theater and culture, and honored with various Theatre Awards, 'SM Azhar Alam' was a famous theater artist. His theatrical journey started from the year 1987 and till the last time of his life (April 2021) he was continuously active in the Theatre world. During his 33 years of theatrical journey, he was continuously working for the development of Hindi-Urdu plays.

Therefore, this Research Article has been written with the aim of explaining his contribution, his role in the development of contemporary Hindi-Urdu dramas. Literary studies and artistic analysis, interview method have been adopted for this theater research. In this article, an attempt has been made to throw light on his general introduction, his color journey, field of work such as play writing, direction, acting, translation, adaptation, set and light design, his theatrical experiments, theatrical magazine he brings out, etc. .

मुख्य शब्द : नाटककार , निर्देशक , अजहर आलम , नाट्य पत्रिका , हिंदी उर्दू रंगमंच।

Playwrighter, Director, Azhar Alam, Natya Patrika, Hindi Urdu Theater

प्रस्तावना

एस. एम. अजहर आलम का सम्बन्ध मूलतः कोलकाता , पश्चिम बंगाल से है परन्तु समकालीन भारतीय नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में इनका एक विशेष स्थान रहा है , जहाँ इन्होंने बतौर निर्देशक एवं अभिनेता नाट्यकला के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। न केवल इन्होंने अपने निपुण अभिनय और कुशल निर्देशन से समकालीन रंगमंच को प्रभावित किया है बल्कि रंगमंच के क्षेत्र में एक नाट्य लेखक, अनुवादक, सेट डिजाइनर, लाइट डिजाइनर, आलोचक, संपादक के रूप में भी इनका बहुमूल्य योगदान रहा है। अपनी पत्नी प्रसिद्ध रंगकर्मी 'उमा झुनझुनवाला' के साथ मिलकर इन्होंने 'लिटिल थेस्पियन' नामक नाट्य संस्था की स्थापना की जो आज केवल कोलकाता ही नहीं भारतवर्ष की एक जानी मानी नाट्य संस्था है, जो समकालीन हिंदी–उर्दू नाटकों के विकास में लगातार सक्रिय है। जहाँ 'एस. एम. अजहर आलम' का

सम्बन्ध उर्दू से रहा वहीं उनकी पत्नी एवं सहकर्मी 'उमा झुनझुनवाला' (जो कि वर्त्तमान की एक प्रसिद्ध रंगकर्मी हैं) का सम्बन्ध हिंदी से रहा। ये न केवल बतौर जीवनसंगी रहे बल्कि नाट्य सफर में भी एक दूसरे के साथी रहे और दोनों ने मिल कर 'लिटिल थेस्पियन' की स्थापना की और इनका एक आधारभूत नाट्य सफर आरम्भ हुआ। अतः यह एक प्रमुख वजह भी रही है 'लिटिल थेस्पियन' के तले हिंदी–उर्दू नाटकों के भाषिक भेद रहित विकास की। यूँ तो हिंदी–उर्दू भले ही आज अलग अलग भाषाओं के रूप में प्रयोग होते हैं परन्तु इनके गहरे सम्बन्ध को नकारा नहीं जा सकता। यही कारण है कि हिंदी या उर्दू भाषा–भाषी को एक दूसरे की भाषा समझने में कोई समस्या नहीं होती है। ये दोनों भाषाओं के लोग भारत में इस तरह घुले–मिले हैं कि इनमे भेद कर पाना कठिन है। 'रामविलास शर्मा' इस सम्बन्ध में लिखते हैं.– "इतिहास में हम जितना ही पीछे की तरफ चलते हैं उतना ही हिंदी–उर्दू का भेद कम दिखाई देता है।" एस. एम. अजहर आलम भी इसी मत के अनुयायी हैं, एवं नाट्य कला के क्षेत्र में वे मानते हैं कि नाटक जब तक लिखित रूप में है वहां भाषिक लिपिगत अंतर होता है पर नाटक जब रंगमच पर पहुँचता है तो उसका यह भाषिक भेद समाप्त हो जाता है। वह लिखते है–"हम जब नाटक पेश करते हैं तो वहां सिर्फ और सिर्फ थिएटर रहता है। जबान हमारे लिए कम अहमियत रखती है। जब तक वह तहरीरी (लिखित) शक्ल में है, वह उर्दू लिपि में ड्रामा रहता है या फिर हिंदी में ड्रामा रहता है , लेकिन जब हम स्टेज पर चले जाते हैं तो उर्दू और हिंदी का फर्क मिट जाता है, वहां सिर्फ नाटक की जुबान होती है, रंगमंच की जुबान होती है, वहां सिर्फ अदाकार, स्टेज और नाजरीन (दर्शक) अहमियत रखते हैं।" समकालीन हिंदी दृउर्दू नाटकों के विकास में एस.एम. अजहर आलम की भूमिका पर विचार करने से पहले एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि एक रंगकर्मी के रूप में एस. एम. अजहर आलम का व्यक्तित्व अपनी एक अलग पहचान रखता है परन्तु अजहर आलम के नाट्य सफर को भली भांति समझने हेतु यह कहना आवश्यक है कि उनके पूरे नाट्य सफर में भी उमा झुनझुनवाला उनकी सहभागिनी रही हैं और वह उमा झुनझुनवाला के। दोनों ने मिलकर अपने नाट्यकर्म को सफलतापूर्वक बरकरार रखा। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध नाटककार 'कमाल अहमद' कहते हैं–"उमा और अजहर का मिलाप महज दो शख्स का मिलाप नहीं है बल्कि दो लिपि का, दो जेहन का मिलाप है। एक ऐसा जेहन जो इंसानियत, इंसान, दोस्ती और मुहब्बतों का कायल है। जहाँ मजहब और जुबान की दूरी मिट जाती है। अलग से किसी का वजूद नहीं रहता, दोनों एक दूसरे में मदगम होकर (मिल कर) एक नए जहत (आयाम) की तलाश में निकल पड़ते हैं।"

अध्ययन का उद्देश्य

समकालीन हिंदी–उर्दू नाटकों के विकास में एस. एम. अजहर आलम की भूमिका पर शोधपरक प्रकाश डालना ।

विषय विस्तार

एस. एम. अजहर आलम का पूरा नाम 'सय्यद मोहम्मद अजहर आलम' है। इनका जन्म 19 जनवरी 1971 में हुआ था। इन्होंने अपनी आरंभिक शिक्षा 'प्रेसीडेंसी मुस्लिम हाई स्कूल' कलकत्ता से प्राप्त की , फिर कलकत्ते के 'मौलाना आजाद कॉलेज' में गए और 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' से उर्दू में 'एम.ए.' एवं 'उर्दू थिएटर, परंपरा और समस्याएं' (Urdu Theatre, Tradition&Problems) विषय पर 'पीएच.डी.' की उपाधि प्राप्त की। ये कलकत्ते के 'मौलाना आजाद कॉलेज' में बतौर सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर कार्यरत थें और 20 अप्रैल 2021 को कोरोना के कारण इनका निधन हो गया।

यह इनका एक सामान्य जीवन परिचय था परन्तु जब हम इनके इस छोटे से जीवनकाल के दौरान नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में इनके वृहद् कार्यक्षेत्र पर नजर डालते हैं तो रंगमच का एक विशेष व्यक्तित्व दृष्टिगोचर होता है, जिसकी भूमिका समकालीन हिंदी–उर्दू रंगमंच के विकास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इनके नाट्य सफर का आरभ वर्ष 1987 में 'जहीर अनवर' के नाटक में एक लड़की के किरदार से हुआ, जब ये मौलाना आजाद कॉलेज में थे। अतः इनके नाट्य सफर का आरंभ ही एक चुनौती भरा था जिसे इन्होंने बखूबी निभाया और फिर नाट्यकला से जुड़ते चले गए। उर्दू में एम.ए. की पढ़ाई के लिए जब कलकत्ता विश्वविद्यालय गए तो इन्होंने नाटक को और गहराई से समझा। वहीं इनकी मुलाकात उमा झुनझुनवाला से हुई जो हिंदी विभाग से थीं और फिर दोनों ने मिलकर नाटक के क्षेत्र में काम करना आरम्भ किया। 1993 में जहीर अनवर ने एक नुक्कड़ नाटक लिखा 'ब्लैक सन्डे' और यह पहला ड्रामा था जिसे अजहर आलम ने बतौर निर्देशक 1994 में किया। और इसी वर्ष एस. एम. अजहर आलम और उमा झुनझुनवाला ने मिलकर एक ऐसे नाट्य दल की परिकल्पना की जो न केवल हिंदी का हो न ही उर्दू का बल्कि हिन्दुस्तानी का हो जिसमे हिंदी उर्दू का भेद न रहे। इसी परिकल्पना के तहत 19 सितम्बर 1994 में 'लिटिल थेस्पियन' का गठन हुआ, जो आज न केवल कोलकाता की बल्कि पूरे भारत की एक प्रसिद्ध रिपर्टरी है। जैसा कि 'उमा झुनझुनवाला' 2010 में एक समारोह के दौरान कहती हैं–"19 सितम्बर 2010 यानि आज लिटिल थेस्पियन अपने सोलह साल पूरे कर चुका। 20 सितम्बर 2010 को यह 17वीं में प्रवेश करेगा।" अर्थात इस वर्ष (2021) यह संस्था सक्रियतापूर्वक अपने 27 वर्षों का समय पूरा करेगा। अतः अपने 50 वर्षों के जीवन आयु में अजहर आलाम 33 वर्षों से रंगमंच से जुड़े रहे। अपने 33 वर्ष के सक्रिय एवं सफल नाट्य सफर में इन्होंने 70 से अधिक नाटकों में अभिनय किया है। इनकी तीन मौलिक नाट्य रचनाएं हैं–'चाक', 'रूहें' और 'नमक की गुड़िया'। इसके अतिरिक्त इन्होंने कई नाट्य रूपांतरण एवं अनुवाद भी किया है जैसे–प) 'गैंडा', जो कि 'यूजीन इनेस्को' की अंग्रेजी रचना 'राइनोसेरस' का हिंदी/उर्दू नाट्य रूपांतरण है ('रंगरस' पत्रिका के अक्टूबर–दिसंबर अंक 2012 में प्रकाशित) 'पतझड़', जो 'टेनेसी विलियम्स' की 'द ग्लास मेनगेरी' का हिंदीध्उर्दू नाट्य रूपांतरण है य पपप) 'चेहरे' , हिंदी–उर्दू में लिखे

इस नाटक की पटकथा एवं विचार 'टोनी देवनी मोरिनेल्ली' की अंग्रेजी रचना 'सिंस ऑफ द मदर' से ली गयी है ('रंगरस' पत्रिका के अक्टूबर –दिसंबर अंक 2010 में प्रकाशित) एवं 'रंगकर्मी' के लिए भी एस.एम. अजहर आलम ने इस नाटक का निर्देशन किया और अब तक इसके 30 शोज हो चुके हैं। इसके अलावा 'उमा झुनझुनवाला' ने भी 'एपिक एक्टर्स वर्कशॉप', न्यू जर्सी के लिए भी इस नाटक का निर्देशन किया है ('सुलगते चिनार' , जो कि 'मुल्कराज आनंद' के अंग्रेजी उपन्यास 'देथ ऑफ अ हीरो' का नाट्य रूपांतरण है) 'सवालिया निशान' , यह 'इस्माइल चुनारा' के नाटक 'दे बर्न पीपल दे डू' का उर्दू अनुवाद है जो 2008 में 'लिटिल थेस्पियन' द्वारा प्रकाशित हुआ य अप) 'यादों के बुझे हुए सवेरे', यह स्माइल चुनारा के उर्दू नाटक का हिंदी अनुवाद है, (जिसका प्रकाशन वर्ष 2005 मंद राजकमल प्रकाशन द्वारा हुआ) 'आबनूसी खयाल', यह 'ऐन राशिद खान' के उर्दू नाटक का हिंदी अनुवाद है, जिसका प्रकाशन वर्ष 2000 में राजकमल द्वारा हुआ और 'मुक्तधारा', यह 'रविन्द्रनाथ टैगोर' के बंगला नाटक का उर्दू अनुवाद है, जिसे एस. एम. अजहर आलम और उमा झुनझुनवाला ने मिलकर किया, जो साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त इनके लेख/आलेख विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। वर्ष 2016 में इनके नाट्यालेखों का संग्रह एक पुस्तकार रूप में 'एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस' द्वारा 'नक्श है रंग रंग' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

इन्होंने 27 से अधिक नाटकों का निर्देशन किया है जैसे– 'ब्लैक सन्डे' (1994), 'सद्गति' (1994) , 'महाकाल' (1995), 'सुलगते चिनार' (1996), 'जब आधार नहीं रहते हैं' (1997), 'तम्सिली मुशाएरा' (1998), 'लोहार' (2000), 'नमक की गुड़िया' (2001), 'कांच के खिलौने' (2002), 'रोक्सी को सृष्टि करता' (2003), 'शुतुरमुर्ग' (2004), 'हयवदन' (2004), 'मंटो ने कहा' (2005), 'बड़े भाई साहब' (2006), कथा कोलाज–1 (मंटो की कहानियों का नाट्य रूपांतरण–'औलाद', 'खोल दो' और 'ठंडा गोश्त') (2007), 'सवालिया निशान' (2007), 'अकी' (2008), 'चेहरे' (2009), 'लोहाकुट' (2009), 'पतझड़' (2009), 'गैंडा' (2011), 'ल हीना वला हुना' (2011), 'बू' (2012), 'रेंगती परछइयां' (2014), 'कबीरा खड़ा बाजार में' (2015), 'धोखा' (2016), 'मिर्जा गालिब' (2016), 'रूहें' (2017), 'मीर जाफर' (2020), 'एंड गेम' (2021) आदि। एवं इन सभी नाटकों के कई कई शोज किये हैं जैसा कि 'चेहरे' नाटक का 30 से अधिक बार निर्देशन किया है, लिटिल थेस्पियन के अंतर्गत 'ब्लैक सन्डे' नाटक के लगभग 165 से ज्यादा शोज हुए हैं। जैसे कि 'उमा झुनझुनवाला' जी कहती हैं– "लिटिल थेस्पियन का पहला नाटक ब्लैक सन्डे जो एक नुक्कड़ नाटक था जिसे हमने 1994 और 1995 के बीच लगभग 165 से भी ज्यादा शोज किये, सिर्फ कलकत्ता ही नहीं, मग्रीबी बंगाल और मग्रीबी बंगाल के बाहर सारे हिन्दुस्तान में।"

'रंगरस' एस. एम. अजहर आलम द्वारा निकाली जाने वाली एक उर्दू थिएटर पत्रिका है, जो रंगकर्म के क्षेत्र में अजहर आलम के व्यक्तित्व को एक विशिष्ट स्थान प्रदान करने की एक प्रमुख वजह है। क्योंकि 'रंगरस' भारत में रंग जगत पर आधारित उर्दू की एक मात्र पत्रिका है। यहाँ केवल साहित्य और कला की बात करें तो पत्रिका एक बहुत सशक्त एवं आवश्यक माध्यम है सामान्य जन को साहित्य एवं कला से जोड़ने के लिए। एवं इसके अभाव में कोई भी साहित्य या कला जन सामान्य तक भली–भांति नहीं पहुँच पाता और उसका दायरा सिमित हो जाता है। यही कारण है कि उर्दू ड्रामा की एक समृद्ध परंपरा होते हुए भी उर्दू भाषा भाषी सामान्य जनता से नहीं जुड़ पाता और न ही अपने लिए पर्याप्त उर्दू भाषा भाषी दर्शक ही बना पाता है। इसी कमी की पूर्ति हेतु अजहर आलम ने उर्दू की पहली थिएटर पत्रिका 'रंगरस' का प्रकाशन आरम्भ किया। "19 सितम्बर 2010 शाम साढ़े छः बजे, भारतीय भाषा परिषद , कलकत्ता में उर्दू के पहले और वाहिद थिएटर मैगजीन 'रंगरस' का इजरा इकबाल प्रोफेसर डॉक्टर मुजफ्फर हनफी के हाथों हुआ।" एस. एम. अजहर आलम इस सम्बन्ध में लिखते हैं कि– "इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि जदीद दौर में थिएटर की तरक्की में थिएटर मैगजीन का किरदार बहुत अहम रहा है।... उर्दू में ड्रामे और थिएटर के मौजू पर मजामीन या खबरें सिर्फ अदबी रसाले में साया होती रही हैं। 'बीसवीं सदी' , 'रूबी' और 'जहीन जदीद' वगैरह इसकी मसाइल है। 'रंगरस' में कबल (पहले) ऐसा कोई रसाला नहीं है जो सिर्फ और सिर्फ फन थिएटर से मुताल्लुक हो जिसे हम 'नाटक पत्रिका' या 'थिएटर मैगजीन' कह सके।"

समकालीन हिंदी–उर्दू नाटकों के विकास में अपने योगदान के लिए इन्हें कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं , जैसे– वर्ष 2001 में पश्चिम बंगाल सरकार के संस्कृति विभाग 'पश्चिम बंग नाट्य अकादमी' की ओर से इन्हें नाटक 'नमक की गुड़िया' के लिए 'सर्वश्रेष्ठ नाटककार' के रूप में सम्मानित किया गया। वर्ष 2007 में भी 'पश्चिम बंग नाट्य अकादमी' की ओर से इन्हें नाटक 'सवालिया निशान' के लिए 'सर्वश्रेष्ठ निर्देशक सम्मान' से सम्मानित किया गया। वर्ष 2011 में हिंदी/उर्दू थिएटर में इनके योगदान के लिए 'ड्रामा एंड म्यूजिक कमिटी , मुस्लिम इंस्टिट्यूट' ने इन्हें सम्मानित किया। वर्ष 2015 में उर्दू थिएटर में इनके योगदान के लिए 'अखबार–ए–मशरिक' ने इन्हें 'आगाहश्र काश्मीरी सम्मान' से सम्मानित किया। वर्ष 2019 में 'नटरंग प्रतिष्ठान' नई दिल्ली, ने नाटक 'रूहें' के लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ नाटककार के रूप में 'नेमिचंद्र जैन सम्मान' से सम्मानित करने की घोषणा की और कोरोना काल के कारण 17 मार्च 2021 को सम्मानित किया।

अपने नाट्य सफर में एस. एम. अजहर आलम नाटक को और बेहतर बनाने हेतु एवं आवश्यकतानुसार लगातार कुछ न कुछ प्रयोग करते रहे हैं जो उनके नाटकों में स्पष्ट दिखाई देता है। उदाहरण के तौर पर उनके कुछ नाट्य प्रयोगों को देख सकते हैं जैसे 'हयवदन' नाटक में देवदत्त , पद्मिनी के लिए गुड्डा और गुड़िया खरीद कर लाता है। ये गुड्डा और गुड़िया वास्तव में इस नाटक के पात्र भी हैं जिसे दर्शाने के लिए विभिन्न निर्देशकों ने भिन्न भिन्न प्रयोग किए हैं जैसे किसी ने पपेट्स का प्रयोग किया है तो किसी ने बच्चों का। परन्तु

अजहर आलाम ने गुड्डे के किरदार के लिए 70 वर्ष के वृद्ध व्यक्ति और गुड़िया के किरदार के लिए 65 वर्षीया वृद्ध महिला को चुना। और यह बहुत सफल प्रयोग रहा। वहीं एक और नाटक 'शुतुरमुर्ग' में भी सेट डिजाईन का बेहतरीन प्रयोग दिखाई देता है। 'शुतुरमुर्ग' एक राजनीतिक व्यंग्य नाटक है। इस राजनीतिक नाटक के मंच को अजहर आलम ने सफेद–काले रंग में एक शतरंज की बिसात की तरह तैयार किया और नाटक के किरदारों एवं उनकी गतिविधियों को शतरंज के मोहरों के रूप में प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त 'स्माइल चुनारा' के नाटक 'सवालिया निशान' के निर्देशन में इन्होंने एक सफल प्रयोग किया। इस नाटक का अंत दंगों और उसकी विभीषिका के बीच होता है जो की लगभग डेढ़ मिनट का दृश्य है। हर तरफ दंगे का माहौल है, तबाही मची हुई है, त्राहिमाम है। साधारणतः इस तरह के दृश्य को दर्शाने के लिए बम–गोलियों, हथियारों, लोगों के चीखने चिल्लाने आदि की आवाजों का प्रयोग किया जाता है। लोगों को भागते हुए, एक दूसरे से लड़ते हुए, डरते–छिपते हुए दिखाया जाता है परन्तु अजहर आलम ने इस दृश्य और इसकी विभीषिका को दर्शाने के लिए ऐसा कुछ नहीं किया बल्कि संगीत और प्रकाश योजना के माध्यम से इस दृश्य को बखूबी दर्शाया। दंगे और उसकी विभीषिका के प्रतीक के रूप में रस्सी से झूले हुए, जले एवं जख्मी पुतले का मार्मिक प्रयोग किया गया जो दंगों में मरते हुए इंसानियत का प्रतीक के रूप में है।

अतः इन प्रयोगों से एक बात और स्पष्ट हो जाती है कि एस. एम. अजहर आलम एक अच्छे अभिनेता, निर्देशक, लेखक, आलोचक, अनुवादक, सम्पादक आदि के अतिरिक्त एक अच्छे सेट और लाइट डिजाइनर भी थें। उनका मानना था कि एक सफल नाट्य प्रस्तुति के लिए आवश्यक है कि निर्देशक, सेट डिजाइनर, लिग्त डिजाइनर मिलकर आपस में राय–विमर्श करके काम करें। इन्होंने कई नाटकों में बतौर सेट डिजाइनर भी अपना योगदान दिया है, उदाहरण के तौर पर कुछ प्रमुख नाटकों को देख सकते है जैसे 'ब्रात्य बसु' द्वारा लिखित नाटक 'अशालीन' य ब्रात्य बसु द्वारा ही लिखित , निर्देशित और अभिनीत नाटक 'सिनेमार मोतो' य 'रंगकर्मी' द्वारा प्रस्तुत एवं स्वयं द्वारा निर्देशित नाटक 'चेहरे' आदि।

अजहर आलम न केवल हिंदी–उर्दू नाटकों से ही जुड़े रहे बल्कि ये नेपाली रंगमंच से भी जुड़े, दार्जीलिंग के नेपाली लोक कलाकारों के साथ मिलकर काम किया और दो नाट्य प्रस्तुतियां दी 'रोक्सी को सृष्टि करता' और 'हयवदन'। 2006 में इन्होंने 'टेलीविजन इंस्टिट्यूट प्रोडक्शन' द्वारा प्रस्तुत 'सत्यजित राय' की फीचर फिल्म 'द फोर कर्सेस' में प्रमुख किरदार अदा किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने नाट्य सम्बन्धी कई संगोष्टियों एवं कार्यशालाओं का भी आयोजन किया है। पूरे बंगाल में ऐसी कोई संस्था नहीं थी जो हिंदी में राष्ट्रीय नाट्य उत्सव कराती हो ऐसे में वर्ष 2010 से 'अजहर आलम' और 'उमा झुनझुनवाला' ने 'लिटिल थेस्पियन' के तहत 'जश्न–ए–रंग' नाम से राष्ट्रीय नाट्य उत्सव का आयोजन आरम्भ किया जो आज तक बरकरार है। नाट्य जगत की बहुत सी हस्तियाँ इसमें शामिल होते रहे हैं जैसे 'रामगोपाल बजाज', 'देवेन्द्रराज अंकुर', 'प्रतिभा अग्रवाल', 'उषा गांगुली', 'एम. के. रैना', 'प्रयाग शुक्ल', 'असलम परवेज', 'ज्योतिष जोशी', 'सुरेश भारद्वाज', 'विजय बहादुर सिंह', 'जावेद सिद्दिकी' , 'इकबाल मजीद' आदि। इसके साथ ही साथ कई प्रसिद्ध रंगकर्मियों ने इस नाट्य उत्सव में अपने नाटक प्रस्तुत किये हैं जैसे 'हबीब तनवीर', 'उषा गांगुली', ' त्रिपुरारी शर्मा', 'द्वेंद्रराज अंकुर', 'मुश्ताक काक', 'भवानी बसीर', 'विनय वर्मा', 'लयिक हसन', 'पुंज प्रकाश आदि'।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम देखते हैं कि समकालीन रंग जगत में 'एस. एम अजहर आलम' अपनी विशेष पहचान रखते हैं। इन्होंने न केवल मौलिक नाट्य रचनाएं की बल्कि इनके द्वारा किए गए नाट्य अनुवादों ने विभिन्न भाषाओं के नाटकों से हिंदी–उर्दू नाट्य परिधि को और विस्तार दिया एवं समृद्ध किया। साथ ही साथ इनके नाट्य रूपान्तरणों ने साहित्य के अन्य विधाओं को भी नाट्य रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके नाट्यालेखों ने नाट्यकला को और विस्तार दिया है। अतः एक तरफ इनके लेखनी ने हिंदी–उर्दू साहित्य को समृद्ध किया है तो दूसरी तरफ इनके अभिनय, निर्देशन, लाइट डिजाईन, सेट डिजाईन, नाट्य प्रयोगों आदि ने रंगमंच अर्थात नाटक के कला पक्ष में अपनी बहुमूल्य भूमिका निभाई है। 'रंगरस' द्वारा उर्दू में नाट्य पत्रिका के अभाव को दूर करने का इनका प्रयास फिलहाल अतुलनीय है क्योंकि वर्तमान में कोई और उर्दू नाट्य पत्रिका प्रकाशित नहीं होती। हिंदी–उर्दू नाटकों के प्रचार प्रसार के लिए विभिन्न नाट्य संगोष्टियों , कार्यशालाओं , 2010 से लगातार प्रत्येक वर्ष 'जश्न–ए–रंग' जैसी हिंदी/उर्दू नाट्य उत्सव का आयोजन आदि निसंदेह इनके नाट्यकर्म की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अतः निसंदेह हिंदी उर्दू नाटकों के विकास में इनकी भूमिका बहुत महत्पूर्ण रही है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *शर्मा रामविलास , महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण , राजकमल प्रकाशन , प्रथम संस्करण–1977 , संस्करण–2008 , पृष्ठ संख्या–216*
2. *आलम एस. एम. अजहर , रस्मे अजरा , रंग रस , एस. एम. अजहर आलम , लिटिल थेस्पियन , अंक–2 , जनवरी–मार्च 2011, पृष्ठ संख्या–18*
3. *अहमद कमाल , रस्मे अजरा , रंग रस , एस. एम. अजहर आलम , लिटिल थेस्पियन , अंक–2 , जनवरी–मार्च 2011, पृष्ठ संख्या–10*
4. *झुनझुनवाला उमा , रस्मे अजरा , रंग रस , एस. एम. अजहर आलम , लिटिल थेस्पियन , अंक–2 , जनवरी–मार्च 2011, पृष्ठ संख्या–07*
5. *झुनझुनवाला उमा , रस्मे अजरा , रंग रस , एस. एम. अजहर आलम , लिटिल थेस्पियन , अंक–2 , जनवरी–मार्च 2011, पृष्ठ संख्या–08*
6. *रंगरस , एस. एम. अजहर आलम , लिटिल थेस्पियन, अंक–2 , जनवरी–मार्च 2011, पृष्ठ संख्या–7*
7. *आलम एस. एम. अजहर , रंग रस , एस. एम. अजहर आलम , लिटिल थेस्पियन , अंक–1 , जनवरी–जून 2015, पृष्ठ संख्या–04*